मोरंगे

मार्च–अप्रैल 2018

इस बार

खिड़की

3 जो देख कर भी नहीं देखते

कविताएँ

5 बम बम / गंगाराम

6 नटखट बंदर

7 गाँव की बस

8 चाँदनी / बारिश आई

कहानियाँ

9 सूखा पेड़

10 अच्छा आदमी

11 अमीर किसान खेत में काम

12 पापा भूख लगी / दुश्मन

13 राजा के टमाटर

14 बिछुड़ गये

याद की धूप–छाँव में

15 बच्चों के साथ सफर

बात लै चीत लै

19 भोजराज का भूत

विष्णु मीना
कक्षा–5, जगनपुरा स्कूल

21 मटरगश्ती बड़ी सस्ती हीहीही–ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : विजय सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – सोनिया गुर्जर, कक्षा–7, समूह–खुशबू
वर्ष 8 अंक 93–94

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

जो देख कर भी नहीं देखते

राज सोनवाल, उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू

कभी–कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ यह परखने के लिए कि वे क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटी। मैंने उनसे पूछा, ''आपने क्या–क्या देखा?''

''कुछ खास तो नहीं, ''उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती हैं, वे बहुत कम देखते हैं।

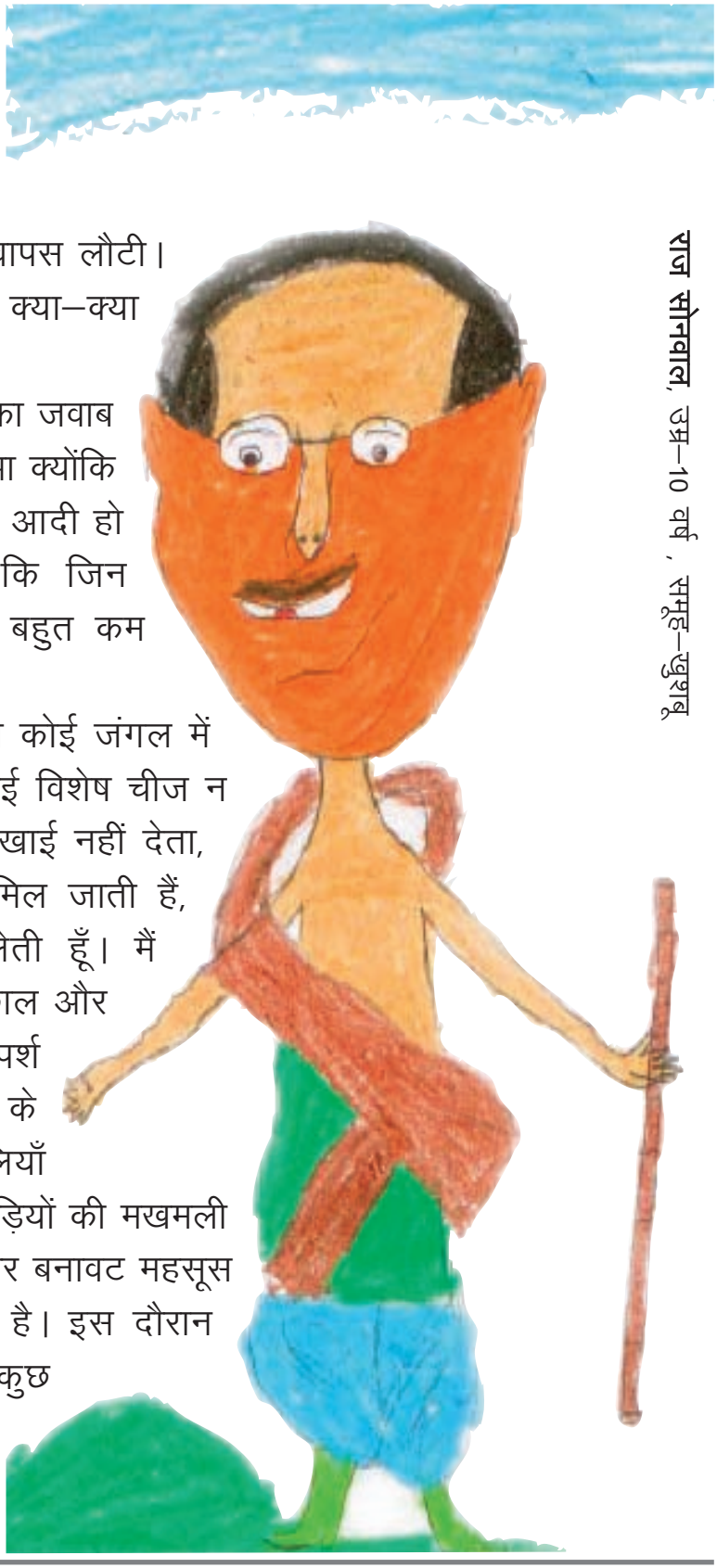

क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटा भर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज न देखे? मुझे –जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता, को भी सैंकड़ों रोचक चीजें मिल जाती हैं, जिन्हें मैं छू कर पहचान लेती हूँ। मैं भोजपत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान मैं टहनियों में नई कलियाँ खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती हूँ तो

टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूंजने लगते हैं। अपनी अंगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियाँ या घास का मैदान किसी भी मंहगे कालीन से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समां मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है।

कभी–कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचल उठता है। अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देख

दीपिका मीना, उम्र–9 वर्ष , समूह–खुशबू

कर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जायेगा। परंतु जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग–अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

यह कितने दुःख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा भरा किया जा सकता है।

हेलन केलर – प्रसिद्ध अमरीकी लेखिका
– जन्म से ही देख और सुन नहीं सकती।

कविताएँ

प्रिया, उम्र–8, समूह–खुशबू

गंगाराम

मेरा तोता गंगाराम,
मीठी बोली प्यारा नाम,
हरे पंख है चोंच है लाल,
खाता मिर्च चनें की दाल,
शाम ढले घर को आता,
टमाटर के संग मिर्ची खाता,
बाग बगीचों का वो राजा,
बच्चे करे राम–राम,
वाह रे तोता गंगाराम।

चेतना मीणा
कक्षा–5, समूह रोशनी

बम–बम

पटाखे फूटे बम–बम।
लक्ष्मी पूजे जय–जय।
रात में नाचे छम–छम।
मंदिर में ढोल बजा डम–डम।
सूरज चमका चम–चम।
रेल चली धक–धक।
बादल गरजे धड़–धड़।
मोटर बोली पी–पी।

अन्तिमा
उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

आशा सैनी, उम्र–10, समूह–खुशबू

सबीना, उम्र–9, समूह–संगम

नटखट बंदर

बारिश का मौसम आया।
सबके मन में खुशहाली लाया।
ठण्डी ठण्डी हवा चली।
चिड़िया बोली डाली पर।
बंदर कूदे पेड़ों पर।
बंदर खाते काले जामुन।
पूँछ उनकी लम्बी काली।
उछल कूद में करे रखवाली।
बच्चों को रूलाता बंदर।
सबको ये डराते बंदर।
बहुत शरारती नटखट बंदर।

अंजली चौधरी
कक्षा–7, राज. उच्च माध्य. विद्यालय, अल्लापुर

गाँव की बस

बस चली भाई बस चली।
पों–पों करती बस चली।
हम सब को लेकर बस चली।
वहाँ पर जाती यहाँ पर जाती।
हर गाँव में यह रूकती जाती।
सब सवारी को भर ले जाती।
पेट्रोल डीजल दोनों से चलती।
इस गाँव से उस गाँव तक।
दिन भर फेरे लगाती रहती।

जयसिंह मीना
समूह–बादल,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

अमर सिंह,
उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

मुस्कान, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

चांदनी

चंदा मामा आयेगा।
रोशनी फैलायेगा।
चौथ का व्रत खुलवायेगा।
बेट्री की जरूरत हटायेगा।
खेतों की रखवाली करवायेगा।
खेतों में चमक आयेगी।
धरती पर उजाला छायेगा।
सबको खुशी दिलवायेगा।
चंदा मामा आयेगा।।

शिवराम
उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

बारिश आई

बारिश आई बारिश आई।
नन्हीं–नन्हीं बूंदे लाई।
सबको खुश करती आई।
फसलों को जीवन देती आई।
किचड़ कादा करती आई।
नदी, नालों को भरती आई।
बादलों को छूती आई।
सबको भिगोती आई।
बारिश आई बारिश आई।

अन्तिमा
उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

कहानी

सूखा पेड़

मनीषा,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–झरना

एक राजा था। उसके पास उसका बगीचा था। उस बगीचे में पेड़–पौधे भी थे। वह राजा रोज उन पेड़–पौधों में पानी डालता था। एक बार उसे एक पेड़ सूखा हुआ दिखाई दिया। यह देखकर राजा को बहुत बुरा लगा। उसने सोचा कि इस पौधे को उखाड़कर फेंक देता हूँ। राजा पेड़ उखाड़ ही रहा था इतने में ही वहाँ रानी आ गई। रानी ने राजा से कहा कि ''यह पेड़ सूख रहा है इसे ज्यादा पानी, खाद, दवाई की आवश्यकता है।'' राजा ने फिर वह पौधा नहीं उखाड़ा और कुछ दिनों के लिए किसी कारणवश राज्य से बाहर चला गया। रानी ने बाजार से पौधे के लिए दवाई मंगवाई। उसने पौधे में बकरी की खाद डाली, दवाई डाली और पानी दिया। कुछ दिनों में वह पौधा वापस से सही हो गया। राजा जब वापस आया तो उसे वह पौधा हरा–भरा दिखाई दिया। यह देखकर राजा बहुत खुश हुआ।

बृजेश बैरवा, उम्र–13 वर्ष, समूह–बादल

अच्छा आदमी

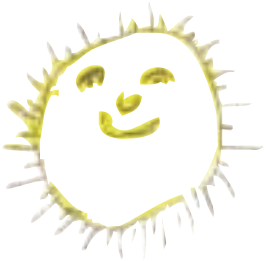

एक बार की बात हैं। रात का समय था। एक आदमी कहीं जा रहा था। वह अकेला ही जा रहा था। रास्ते में बा. रिश होने लगी तो उस आदमी ने अपना छाता खोला और चलने लगा। उसे एक बूढ़ा आदमी मिला। बूढ़ा आदमी उससे बोला कि, ''बेटा मुझे बहुत तेज सर्दी लग रही है क्या तुम मुझे अपने छाते में ले लोगे?'' आदमी उस बूढ़े को छाते के अन्दर ले लेता है। उन दोनों को रात होने के कारण डर लग रहा होता है। थोड़ी देर में वे दोनों, आदमी के घर पहुँच जाते हैं। आदमी बूढ़े को पहनने के लिए कपड़े देता है। इसके बाद दोनों खाना खाकर सो जाते हैं। वे दोनों सुबह उठते हैं तो आदमी चाय बनाकर लाता है और वे दोनों चाय पीते हैं। बूढा आदमी ने कहा कि, ''बेटा अब मैं चलता हूँ।'' वह आदमी बोला ''बाबा आप मत जाओ कुछ दिन यहीं रूक जाओ। मुझे आपके साथ रहना अच्छा लगा है।'' बूढ़ा आदमी बोला, ''अच्छे तो आप हैं जो बिना जान पहचान के आपने मेरी इतनी मदद की। अच्छा मैं चलता हूँ। नमस्ते।''

प्रिंस, उम्र–8 वर्ष, समूह–झरना

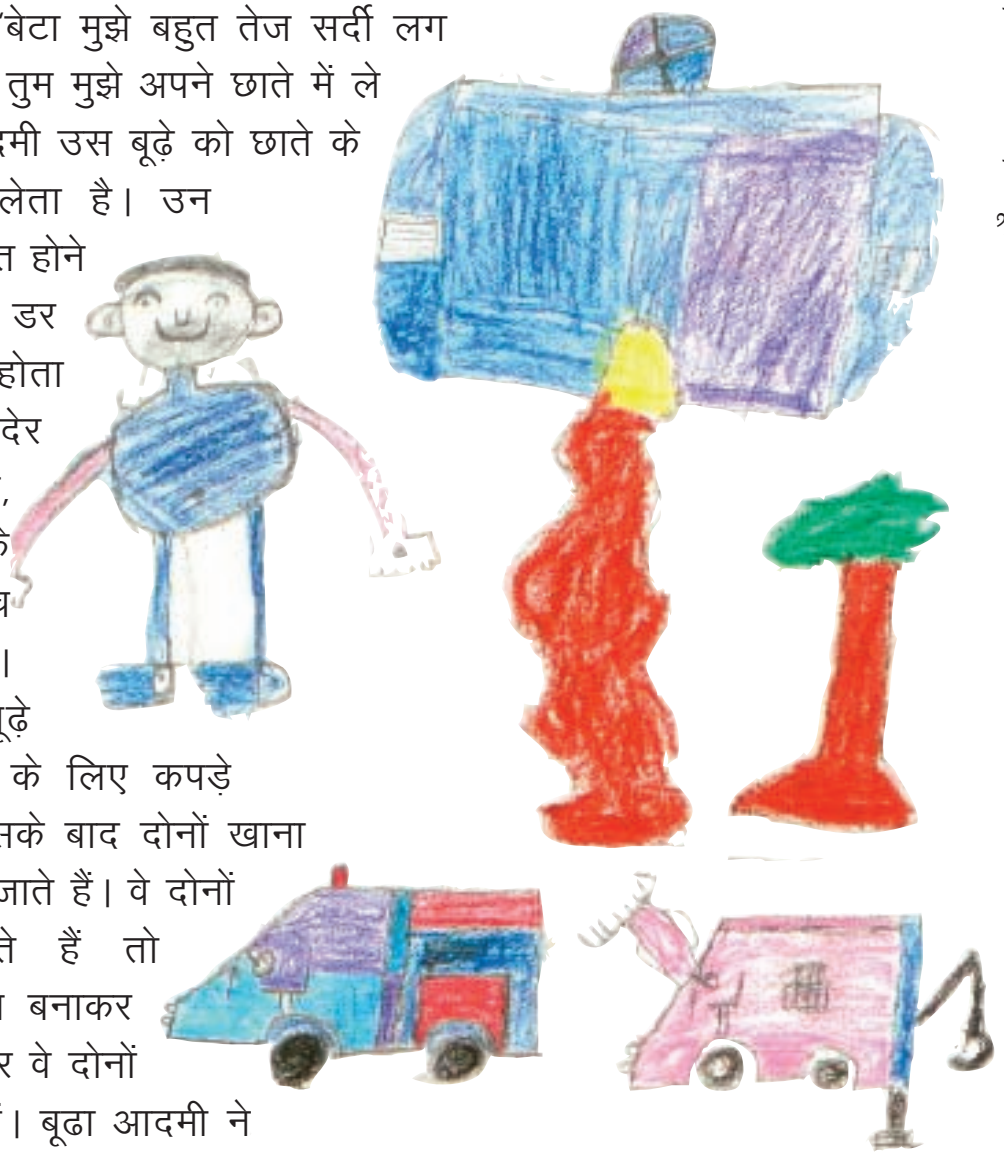

नन्दिनी वर्मा, समूह–बरगद, उम्र–9 वर्ष

भारती मीना, उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

अमीर किसान

एक किसान था। वह बहुत अमीर था। उसके एक बकरी, एक भैंस और एक गाय थी। एक दिन वह बाजार गया। वह बीस रूपये लेकर बाजार गया। वह दस रूपये के नमकीन लाया और दस रूपये के पतासे लाया। वह आधे रास्ते में पहुँचा होगा कि उसके घर एक चोर आया और उसकी बकरी को लेकर चला गया। फिर कुछ देर बाद उसकी भैंस को भी ले गया। तीसरी बार में चोर गाय को भी लेकर चला गया। किसान जब घर आया तो उसने देखा कि उसकी बकरी, भैंस, गाय नहीं है। अब वह किसान गरीब हो गया और चोर अमीर बन गया था।

कृष्णा बैरवा, उम्र–9 वर्ष, समूह–सूरज

खेत में काम

एक किसान था। उसका एक लड़का था। वे दोनों खेतों में काम करते थे। उन दोनों के पास एक आदमी आया उसने कहा, ''तुम खेती का काम करते रहते हो। तुम आज शाम 5 बजे मेरे घर आ जाना, तुम्हारे लिये काम है।'' किसान और उसके लड़के ने कहा हम दोनों आ जायेंगे। फिर वह आदमी वहाँ से चला गया। जब 5 बजे तो वे बाप–बेटा उस आदमी के घर चले गये और उस आदमी से पूछा, ''तुम्हारा खेत कहाँ है?'' आदमी ने कहा कि, ''बाग वाले कूए से सबसे पहले नंबर का खेत है।'' उन दोनों ने कहा, ''हम यहाँ पहली बार आये हैं। हमें आपके खेत का पता कैसे चलेगा?'' आदमी ने कहा, ''चलो मैं तुम्हें बता कर आता हूँ।'' उन दोनों बाप–बेटे ने एक दिन में काम खत्म कर दिया। उस आदमी ने उन दोनों को पैसे दे दिये और वे दोनों वापस घर चले गये।

पवन बैरवा, उम्र–8 वर्ष, कक्षा–3, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

पापा भूख लगी

एक बार एक शेर था। उसके एक पत्नी और तीन बच्चे थे। शेरनी और उसके बच्चों को भूख लगी तो बच्चों ने कहा कि पापा हमें भूख लग रही है। शेर फिर जंगल में शिकार करने गया तो उसको एक शिकार मिल गया। उसको वह बच्चों के पास ले गया। फिर शेरनी और बच्चों ने भर पेट खाया।

सोनू बैरवा, समूह–सूरज, उम्र–10 वर्ष

दुश्मन

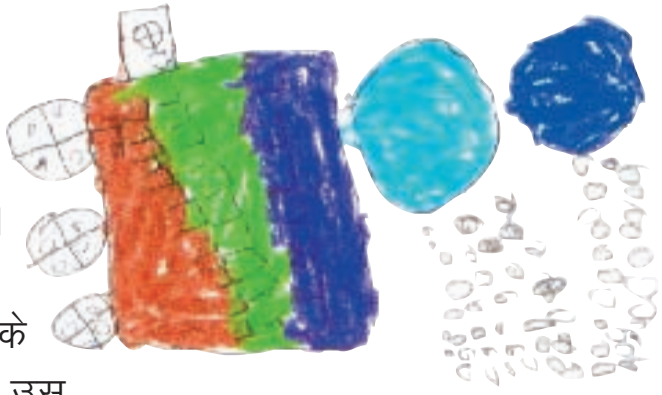

अमन मीना, उम्र–6 वर्ष, समूह–खुशबू

एक बहुत बड़ा जंगल था। उसमें बहुत सारे जानवर रहते थे। एक दिन एक चिड़िया का जन्मदिन था। उस चिड़िया के माता–पिता कहीं गये हुए थे। उस चिड़िया को अकेलापन महसूस हो रहा था। फिर जंगल के सारे जानवर उस चिड़िया के पास आ गये। चिड़िया को अकेलापन महसूस नहीं होने दिया। सब जानवर मिलकर उसका जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मना रहे थे तभी वहाँ पर शेर आ गया। उसने सभी जानवरों को देखा तो मन ही मन सोचा कि यहाँ तो इतने सारे जानवर हैं यदि मैं इन सबका शिकार कर लूंगा तो मुझे दस दिन तक शिकार करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इतनी ही देर में जोर से गड़गड़ाहट की आवाज आई और बारिश होने लगी तो सभी जानवर इधर–उधर भाग गये। सभी जानवर शेर से दूर चले गये। शेर सोचता ही रह गया। एक बिल्ली की नजर शेर के ऊपर पड़ी तो वह समझ गई कि शेर यहाँ शिकार करने के लिए आया है। बिल्ली एक पेड़ पर चढ गई और शेर से कहा कि ''तुम हमारे दुश्मन हो।'' बादल सही समय पर गरजे और बरसात हो गई नहीं तो तुम हमें खा जाते।

दीपक नायक, उम्र–11 वर्ष, कक्षा–4

राजा के टमाटर

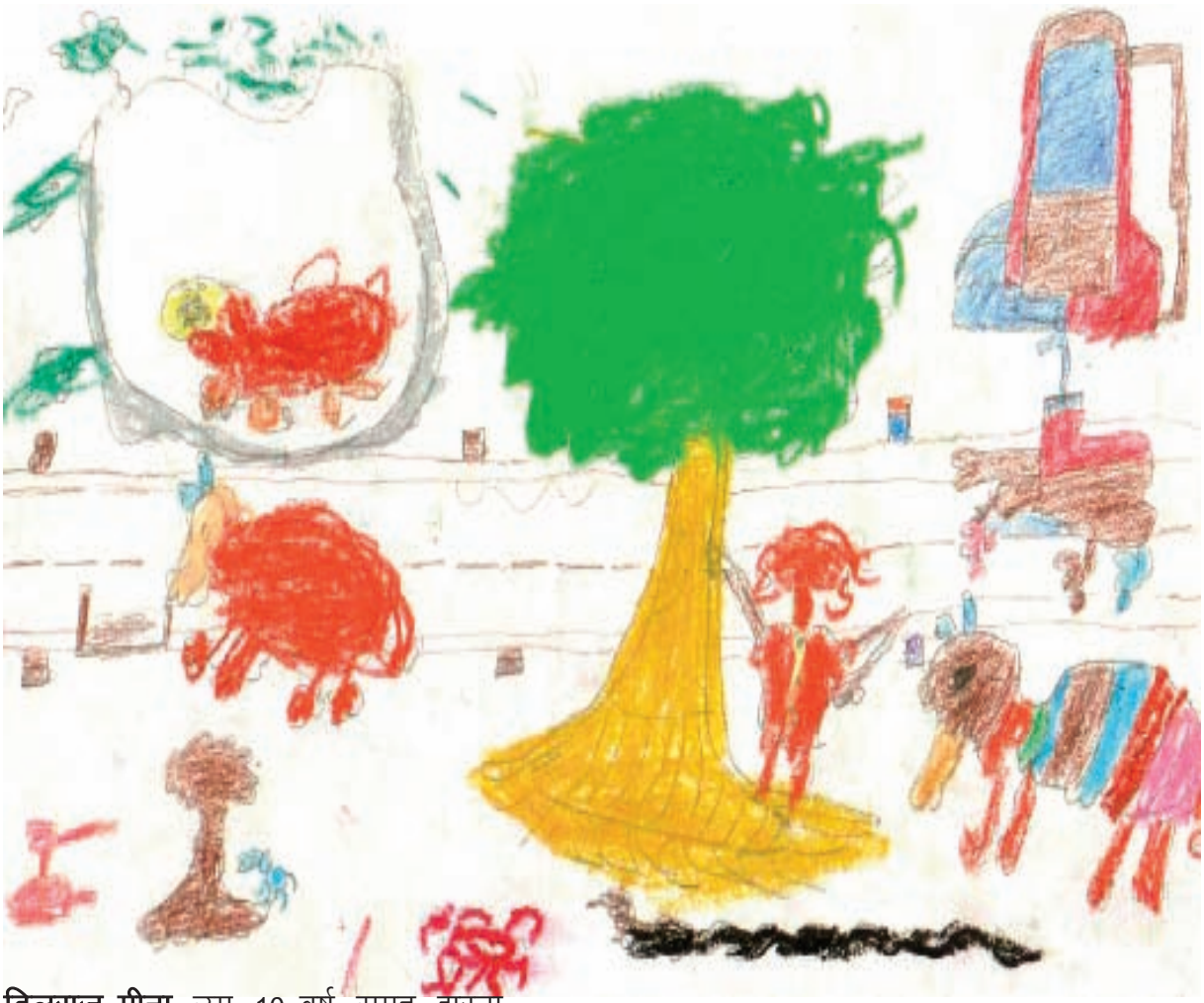

दिलराज मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–झरना

एक बार एक रानी और एक राजा था। वे बहुत अमीर थे। एक दिन वे खेत पर गये और उन्होंनें टमाटर के पौधे उगाये फिर उन्होंने पौधों में पाईप से पानी दिया। काम करते करते उन्हें शाम हो गई। वे अपने महल में वापस आ गये। अपने महल में खाना खाने के बाद जब उन्हें रात हो गई तो वे सो गये। फिर सुबह उठकर उन्होंनें चाय बनाई। चाय पीकर उन्होंनें रोटी–सब्जी बनाई । उन्होंनें रोटी–सब्जी बांध ली और खेत पर चले गये। खेत पर जाकर देखा तो पौधों में टमाटर आ गये थे। उन्होंने एक टमाटर तोड़ा और खाकर देखा तो वह बहुत मीठा लगा। उन्होंनें टमाटर की केरिट भर ली और उसे अपने महल में ले आये फिर उन्होंने खूब टमाटर खाये।

मीनाक्षी बैरवा, समूह–सूरज, उम्र–10 वर्ष

बिछुड़ गये

एक बार की बात है। एक चूहा अपनी माँ से बिछुड़ गया था। उसकी माँ एक शेर की गुफा में घुस गई। बच्चा जब अपनी माँ को तलाशते–तलाशते गुफा के अन्दर गया तो उसे उसकी माँ तो नहीं मिली बल्कि दो शेर के बच्चे दिखे। डर के मारे चूहा एक पत्थर के पीछे छिप गया। वह वहीं पर बिल बनाकर रहने लगा। धीरे–धीरे उसकी दोस्ती शेर के बच्चों से हो गई। अब वह वहीं उनके साथ रहता, उनके साथ खेलता, खाना खाता। धीरे–धीरे शेर के बच्चे भी बड़े हो गये और चूहा भी बड़ा हो गया। वे अपना–अपना परिवार बसाने के लिए निकल गये और आपस में बिछुड़ गये।

सोनू सैन, कक्षा–7,
उदय सामुदायिक
पाठशाला कटार

विक्रम, उम्र–8 वर्ष, समूह–झरना

नंदिनी महावर, उम्र–12 वर्ष, समूह–पीपल

बच्चों के साथ सफर

एक बार मैं राज्य स्तरीय बास्केट बॉल प्रतियोगिता हेतु सवाई माधोपुर जिले की टीम लेकर बाड़मेर गया। जिसमें ग्रामीण शिक्षा केन्द्र जगनपुरा व कटार की बालिका थी। मेरे साथ कटार स्कूल के शाला सहायक बद्री लाल की पत्नी रूपकलां महिला संरक्षक के रूप में जा रही थी। हमारे साथ हैण्डबॉल की बालक और बालिका वर्ग की टीम भी थी। हम सवाई माधोपुर से सुबह की जोधपुर भोपाल ट्रेन से रवाना हुए।

बच्चे मौज मस्ती करते हुए सफर का आनन्द ले रहे थे। शाम को 7 बजे ट्रेन जोधपुर पहुँची। हैण्डबॉल टीम जोधपुर से पहले के स्टेशन रानी बाग पर ही उतर गई। अब मैं और रूपकला अपनी टीम के साथ जोधपुर स्टेशन उतरे। मैंने पूछताछ कार्यालय पर जाकर पूछा कि बाड़मेर के लिए जाने वाली ट्रेन कितने बजे जायेगी। पूछताछ कार्यालय से सूचना प्राप्त हुई कि आज की ट्रेन जोधपुर के बजाय किसी और स्टेशन से लगेगी। यह सुनकर मेरा दिमाग सन्न रह गया। मैं वापस टीम के पास आया। मैंने सारी बात उनको बताई। अब वे सब भी चिन्तित हो गये। मैंने

हैण्डबॉल की टीम के साथ आये शिक्षक महेन्द्र जादौन व भारती शर्मा से फोन पर बात की। अन्त में मैंने तयःकिया कि हम कार या टेम्पों की मदद से उस स्टेशन की दूरी तय करके ट्रेन पकड़ेंगे। स्टेशन से बाहर आकर उस स्टेशन की दूरी व लगने वाले समय के बारे में जानकारी प्राप्त की। टीम के सदस्य भूखे अलग थे। हम सभी ने निर्णय लिया कि पहले हम उस स्टेशन पर पहुँचेंगे। हमने आस–पास के कार टैम्पों वालों से बातचीत की। एक टैम्पो वाला बजट के हिसाब से ठीक लगा। मैंने पुलिस वालों से भी टैम्पों वाले के बारे में सूचना साझा की। पुलिस ने भी सक. ारात्मक रवैया दिखाते हुए टैम्पो वाले को हिदायत दी कि इनको सही प्रकार से सही समय पर छोड़ देना। हम लोग स्टेशन से रवाना हुए।

सभी डरे–सहमे से बैठे। रात में अपने गन्तव्य स्थान की ओर चले जा रहे थे। टैम्पो जोधपुर सिटी को पार करके हाइवे पर सरपट दौड़ा चला जा रहा था। हाइवे के पास से एक क्रॉस रास्ते में टैम्पो उतरा। वहाँ रूकना असुरक्षित था। टैम्पो हि. चकौले खाते हुए चला जा रहा था। कई गाँव पीछे छूटते जा रहे थे। रास्ते में एक जगह तीन मोटर साईकिल पर 6–7 लोग खड़े होकर शराब का सेवन कर रहे थे। उस समय लगभग रात्रि के 09:30 बज रहे थे। टैम्पों ड्राइवर डर कर मुझसे बोला कि वापस लौटते समय ये लोग मुझे लूट सकते हैं। मैंने कहा कि तुम सावधानी पूर्वक लोटना या रात में स्टेशन पर ही रूक जाना। उसने रूकने का सुझाव बेहतर माना। हम स्टेशन पर पहुँचे। मैंने उसे किराया अदा किया। तभी 5–6 लोग टैम्पो वाले के पास आये और बोले कि क्या तुम हमको जोधपुर ले चलोगे। टैम्पो वाला किराया तय करके जाने लगा तो मैंने उसको धन्यवाद दिया और बच्चों को लेकर कांकरोली रेल्वे स्टेशन के प्लेटफार्म पर पहुँचा।

वहाँ ट्रेन खड़ी हुई मिली। हमने पूछताछ कर टिकिट प्राप्त कर ट्रेन में अपनी जगह ले ली। मैंने कैन्टीन वाले से भोजन के बारे में पूछा। वह गरम भोजन तैयार करने लगा। सभी ने पूड़ी–सब्जी खाई। मैंने सभी को सो जाने के निर्देश दिये। सभी बच्चियाँ सो गई। पूरा कम्पार्टमेंन्ट खाली सा था। मैंने रूपकला जी से कहा कि आप भी बच्चियों के पास बैठ जाओ। वे बैठ गई, परन्तु वे परेशान नजर आ रही थी। मैंने उनसे आराम करने के लिए कहा। सभी बच्चियों को नींद आ गई। मेरी आँखों से नींद कोसों दूर थी। मैं अपनी जगह से उठा और सभी खिड़कियाँ बंद कर दरवाजे भी लॉक कर दिये। दूसरी तरफ के दरवाजे के रास्ते में सिंगल सीट पर पैर आड़े लगा कर बैठ गया। ट्रेन लगभग 11:00 बजे रवाना हुई। मैंने अपनी खिड़की खोल रखी थी ताकि हवा लगती रहे और मैं सो नहीं जाऊँ। समय व दूरी धीरे–धीरे कम होती जा रही थी। मुझे भी नींद के झौंके आ रहे थे। अचानक एक लड़की

आरती सैनी ऊपर की बर्थ से उतर कर मेरी ओर आने लगी। वह मेरे पैर से टक. राई तो मेरी नींद खुल गई। मैंने उससे पूछा कि तुम कहाँ जा रही हो? वह कुछ भी नहीं बोली। मैं समझ गया कि शायद इसे नींद में चलने की आदत है। मैंने उसे जगाकर उसको उसके स्थान पर पहुँचाया। मैंने अपना मुँह धोया, अपने आप को जगाया और निश्चय किया कि मैं झपकी लेने की गलती भी नहीं करूंगा। मैं जागता रहा। बाड़मेर स्टेशन आ गया। इस तरह एक और सफर पूरा हुआ।

दीपिका मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू

हम उतरकर प्रतियोगिता केन्द्र तक पहुँचे। वहाँ टीम का इन्द्राज करवाकर उपस्थित सदस्यों से नहाने–धाने की सुविधा के बारे में जानकारी ली। उन्होंने वहाँ इस तरह की सुविधा नहीं होना बताया पर पास में ही एक काम्पलेक्स के बारे में बताया। हम वहाँ जाकर नहाये, फ्रेश हुए। वहाँ से वापिस आये और प्रतियोगिता केन्द्र द्वारा निर्धारित विश्राम स्थल के लिए टैम्पो से रवाना हुए। वहाँ पहुँचकर पता लगा कि विद्यालय में ताला लगा हुआ है। मैंने प्रतियोगिता केन्द्र प्रभारी को फोन किया। उन्होंने एक फोन नम्बर दिया। मैंने उस नम्बर पर बात की। वहाँ एक महिला आई, उसने विद्यालय का ताला खोलकर एक कमरा हमें रूकने के लिए दे दिया। यहाँ भी शौचालय–नहाने–धोने की सुविधाओं का अभाव था। हमने यहाँ कुछ देर रूककर आराम किया। अब हम प्रतियोगिता स्थल के लिए रवाना हुए।

प्रतियोगिता स्थल पर भी सुविधाओं का अभाव था। खुले में भीषण गर्मी में बच्चियों को खड़े रहना पड़ा। ONGC के अधिकारियों व स्थानीय नेताओं की

उपस्थिति में कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। परेड, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयेाजन हुआ। इस समय बच्चे पाण्डाल में बैठे हुए थे। कार्यक्रम समाप्ति के बाद विश्राम स्थल पर पहुँचे। मैं रूपकला से कहकर बच्चियों के लिए भोजन व्यवस्था हेतु वापस बाजार आया। वहाँ से सभी के लिए भोजन पैक करवाकर लेकर गया। सभी ने भोजन किया और विश्राम किया। रात में जब सोने का समय आया तो मेरे साथ दुविधा हो गई। रूपकला जी बच्चियों के साथ सुनसान विद्यालय में अकेले सोने में असमर्थता जता रही थी। मैंने अपने आप से कई तरह के सवाल किये। हेमन्त से बात की। आखिर में मैंने वहीं सोने का निर्णय लिया। मैं दरवाजे के पास सोता था। वहाँ भी एक दिन एक लड़की बीना रात में उठकर खिड़की के पास आकर ओ–री जीजी.. , ओ...री जीजी... चिल्लाने लगी। मैं जगा, उसको झिंझोड़ा और बैठाया। उसके साथ की लड़कियों ने बताया कि यह रात में बड़कती (बड़बड़ाती) है।

हमारी टीम ने अपने मैंच खेले। हम मैच पूरे होने के बाद बस के द्वारा जोधपुर वापस आये। हमारे साथ छात्र वर्ग हैण्डबॉल टीम के सदस्य भी थे। हम टिकिट कटवाकर, भोजन करके रेल की प्रतीक्षा कर रहे थे। ट्रेन आई हमने जगह तलाश की लेकिन पर्याप्त मात्रा में सभी के लिए एक जगह स्थान नहीं मिला। मैंने गार्ड व स्टेशन पर उपस्थित एक मित्र के माध्यम से विकलांग डिब्बे में जगह ली। वहाँ नीचे बैठने के लायक जगह उपलब्ध थी। सभी नीचे बैठकर सुस्ताने लगे। ट्रेन भी सरपट चली जा रही थी। अचानक एक स्टेशन पर ट्रेन रूक गई। रेल्वे पुलिस के 5–7 जवान धड़ाधड़ डिब्बे में घुसे। वे पूछने लगे कि इन बच्चों के साथ कौन है? उन्होंने बच्चों से भी पूछा। मैंने खड़े होकर कहा, ''ये बच्चे मेरे साथ हैं।'' उन्होंने मुझे सवालों से घेर दिया। मैंने अपना व्यक्तिगत एवं संस्थागत परिचय दस्तावेजों के साथ दिया। उसके बाद हमारे आने–जाने के कार्यक्रम के बारे में बताया। उन्होंने बच्चों से भी मेरे बारे में पूछा। उनको जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा जारी पत्र भी दिखाया। उन्होंने मेरा व्यक्तिगत व संस्थागत पता कागज में नोट किया। मैंने इस सारी घटना के पीछे के कारण को जानना चाहा तो एक ने बताया कि किसी व्यक्ति ने फोन से शिकायत की है कि इस ट्रेन के विकलांग व्यक्तियों के डिब्बे में लड़के–लड़कियों को बैठाकर कहीं ले जाया जा रहा है। मुझे आश्चर्य व खुशी हुई। आश्चर्य यह था कि पुलिस कितना सक्रिय हो गई है और खुश इसलिए कि समाज में जागरूक व्यक्तियों का अभाव नहीं हुआ। हम जयपुर पहुँचे, वहाँ से दूसरी ट्रेन पकड़कर सवाई माधोपुर आ गये। सभी बच्चे–बच्चियाँ अपने–अपने स्थानों के लिए रवाना हो गये।

जीवनेन्द्र सिंह, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

कृष्ण मीना, उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू

भोजराज का भूत

एक बार भोजराज नाम का लड़का था। वह गाय, बकरी व भैंस चराता था। एक दिन उसके पास एक पंडित जी आये।

वह पंडित जी से बोला, ''आप मेरा हाथ देखो और मेरे जीवन के बारे में बताओ?''

पंडित बोला, ''भोजराज तेरा हाथ बहुत शुभ है, केवल एक बात का ध्यान रखना। कभी तुम ससुराल जाओ तो बाजरे की रोटी व तिल्ली का तेल मत खाना। यह तेरे लिए हानिकारक हैं।''

एक दिन भोजराज अपने ससुराल चला गया। उसकी सास ने तिल्ली का तेल व बाजरे की रोटी खाने के लिए रख दी। भोजराज ने उसे खा लिया। उसके बाद उसे याद आया कि पंडित जी ने बाजरे की रोटी व तिल्ली का तेल खाने के लिए मना किया था। इतने में ही भोजराज बेहोश हो गया। थोड़ी देर बाद उसकी सास उसके लिए चाय लेकर आई। वहाँ उसने उसे देखा तो वह घबरा गई।

''यह तो मर गया।'' सास के मुँह से आवाज निकली। उसने इसकी सूचना गाँव वालों को दी। इसके बाद गाँव वाले उसको लेकर जलाने के लिए चल दिये। भोजराज के पिता ने चिता में आग लगा दी। आग की गर्मी से भोजराज को होश आ गया। वह जल्दी से उठा और लकड़िया हटाकर चिता में से बाहर निकल आया।

''आप लोग मुझे क्यों जला रहे हो?, मैं तो जिंदा ही हूँ।'' भोजराज ने कहा।

अंकित मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–संगम

यह देखकर सभी लोग डर गये और वहाँ से भाग गये। भोजराज ने सोचा मैं तो नंगा हूँ, गाँव में कैसे जाऊँ। वह भागकर पास में एक पुलिया के नीचे जाकर छिप गया। कुछ देर बाद वहाँ पर एक आदमी आया।

''तुम कौन हो?'' आदमी ने पूछा।

''मैं भोजराज हूँ।'' यह सुनकर ही वह व्यक्ति मर गया। इसी तरह भोजराज से जो भी मिलता वह मर जाता। इस बात से पूरा गाँव परेशान हो गया। सभी गाँव वालों ने मिलकर उसकी सूचना पुलिस को दी और दूसरे दिन पुलिस भोजराज को पकड़ने गई। पुलिस ने भोजराज को पकड़ा तो पकड़ने वाला पुलिसकर्मी ही मर गया। यह देखकर सारे पुलिसवाले वहाँ से भाग गये। इसके बाद गाँव वाले बोले की भोजराज के दोस्त को बुलाकर लाओ। भोजराज का दोस्त जब पुलिया के पास पहुँचा तो भोजराज उसे दूर से ही पहचान गया। भोजराज ने उससे कहा, ''तुम मेरे पास मत आना नहीं तो तुम भी मर जाओगे। मैंने कपड़े नहीं पहने हुए हैं। पहले गाँव में जाकर मेरे घर से मेरे कपड़े लेकर आओ, तभी तुम सब बच सकते हो।'' भोजराज का दोस्त उसके कपड़े ले आया। भोजराज कपड़े पहनकर उसके दोस्त के साथ वापस गाँव में आ गया। अब भोजराज के बात करने या छूने से किसी की भी मृत्यु नहीं हो रही थी। भोजराज ने फिर गाँव वालों को सारी बात बताई। जो लोग मरे थे उन्हे भी होश आ गया। असल में वे सब डर के कारण बेहोश हो गये थे। इसके बाद सभी अपने गाँव में आराम से रहने लगे।

शैलेन्द्र सिंह राजावत, शिक्षक, उदय पाठशाला गिरिराजपुरा

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

1. हरा–हरा आटा, लाल पराठा।
2. एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर उल्टा रखा।
3. ऐसी कौन सी सब्जी जिससे ताला चाबी आता हो।
4. एक प्लेट मे दो अंडे एक ठंडा एक गरम।
5. ना कददू ना ककडी, मीठी मीठी
   लडकी का रस पीकर मुस्कुराओ।

काजल, नन्दनी,
अनुष्का, वंदना, समूह– पीपल

दिलखुश मीना,
उम्र–12 वर्ष, समूह–तिरंगा

हीहीही
ठीठीठी

1. बेटी पिता से बोलती है – पिताजी गुलाब के पौधे लगाए काफी दिन हो गए उनमें एक भी कली नहीं आई।

पिता – बेटी तुम्हे कैसे पता चला?

बेटी – क्योंकि पिताजी मै रोज उसे उखाड़ कर देखती हूँ।

लविश, उम्र – 6 वर्ष, समूह–चंदन

2. दो दोस्त थे एक का नाम राम दूसरे का नाम श्याम था।
   राम ने कहा, ''देखो श्याम मैं 10वीं में पास हो गया तो मेरे पापा ने मुझे 19000 का मोबाईल दिलाया हैं।''

श्याम ने कहा, ''बस! मैं 10वीं में फेल हो गया हूँ पर मेरे पापा ने मुझे 500000 का ट्रेक्टर दिया है, सोच अगर मैं पास हो जाता तो मुझे क्या मिलता।''

मोनू मीना, समूह–तिरंगा, उम्र–12, कक्षा–7

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

प्रियंका मडावर, उम्र–14 वर्ष, समूह–पीपल

एक बार की बात है। एक गाँव था। उस गाँव के पास एक बिल्ली रहती थी। एक दिन उसने बच्चे दिये। उसके पास घर नहीं था। वह घर बनाने के लिए एक सड़क पर जा बैठी। थोड़ी देर तक बैठी रही फिर एक ट्रक आया। वह ट्रक एक सेठ का था। वह ट्रक बिल्ली के पास आ गया तब भी वह बिल्ली सड़क से नहीं हटी। ट्रक के मालिक ने कहा, "बिल्ली बहन सड़क से दूर हो जा।" बिल्ली ने उनकी नहीं सुनी। फिर उसने बिल्ली के पास जाकर कहा तो बिल्ली ने कहा, "भैया पहले तुम मुझे दो–चार बांस दे दो। फिर मैं सड़क से दूर हो जाऊँगी।

जितेन्द्र नायक, *समूह–बादल, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

देखो गाँव में आया नाई
नाई ने ढोलक बजाई .....

अरविन्द मीना, *कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

तरुण सैनी उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू

पहेलियों के ज़वाब –

1. मेंहन्दी 2. आसमान 3. लोकी 4. सूरज–चांद 5. गन्ना

सविता मीना,
उम्र–12 वर्ष, समूह–तिरंगा